Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAJASTHAN - CET

सीनियर सैकण्डरी स्तर

समान पात्रता परीक्षा

भाग – 1

सामान्य अध्ययन - I

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN – (CET)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ	1
2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम	4
3.	राजस्थान की स्थापत्य कला : किले, स्मारक एवं ऐतिहासिक स्थल	46
4.	राजस्थान के मेले, त्योहार, लोक कला, लोक संगीत, लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	62
5.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत (रितिरिवाज, आभुषण, वेशभूषा)	79
6.	राजस्थान की जनजातियाँ	86
7.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, प्रमुख संत एवं लोक देवता एवं लोक देवियाँ	90
8.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	104
9.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान, राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन, राजनैतिक जागरण	120
10.	प्रजामण्डल एवं राजस्थान का एकीकरण	132
11.	राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ, प्रमुख कृतियाँ एवं साहित्य	139
	राजस्थान की राजव्यवस्था	
1.	राज्यपाल	149
2.	मुख्यमंत्री	156
3.	राज्य मंत्रिपरिषद	160
4.	राज्य विधान मंडल	163
5.	उच्च न्यायालय	175
6.	राजस्थान में जिला प्रशासन	180

7.	मुख्य सचिव	188
8.	राजस्थान लोक सेवा आयोग	189
9.	राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग	193
10.	राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान	196
11.	राजस्थान राज्य सूचना आयोग	201
राजस्थान की अर्थव्यवस्था		
1.	राजस्थान में गरीबी व बेरोजगारी	205
2.	सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	206
3.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	208

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ

- राजस्थान के प्राचीन स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के समकालीन है प्राक हड़प्पाकालीन तथा उत्तर हड़प्पाकालीन भी मिले है।
- सिन्धु घाटी सभ्यता का विकास सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदियों के किनारे हुआ।

शासन पद्धति

स्टुअर्ट पिगट – पुरोहित वर्ग का शासन
हण्टर – जनतंत्रात्मक पद्धति
व्हीलर – मध्यम वर्गीय जनतंत्रात्मक
अर्नेस्ट मेके – एकतंत्रात्मक शासन

इस सभ्यता से मानव नस्ल की अस्थियाँ मिली।

i. भूमध्य सागरीय (सर्वाधिक)
ii. प्रोटो ऑस्ट्रेलाइड
iii. अल्पाइन
iv. मंगोलियन

वस्तुओं के आधार पर सभ्यताओं का सही क्रम

(i) पाषाण कालीन – बागोर
(ii) ताम्र युगीन – आहड़
(iii) कांस्य युगीन – कालीबंगा
(iv) लौह युगीन – सुनारी

- वृक्ष पूजा के प्रमाण – पीपल, बबूल, तुलसी
- प्रतीक पूजा – स्वास्तिक व सींग
- परिवार – मातृसत्तात्मक व संयुक्त परिवार

1. कालीबंगा सभ्यता

- यह एक सिंधी भाषा है।
- काली बंगा शब्द का अर्थ – काली चूडियाँ होता है।
- टेस्सीटोरी इसको प्राचीन सभ्यता होने का संकेत करने वाला प्रथम व्यक्ति था।
  यहाँ से 2 टीलों का उत्खनन हुआ –
  (i) पश्चिमी टीला (दुर्ग टीला)
  (ii) पूर्वी टीला (नगर टीला)
- यहाँ दो प्रकार की सभ्यताओं के प्रमाण मिले – प्राक् हड़प्पा व हड़प्पाकालीन
- खुदाई – 5 स्तर पर हुई।
- मृद्‌भाण्ड के प्रकार (फेब्रिक्स) – 6
- दोहरे जुते खेत के साक्ष्य मिले।
- लकड़ी की नालियाँ, कच्ची ईंटों के प्रमाण मिले।
- दशमलव पद्धति में बटखरे मिट्टी का स्केल
- मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली
- तंदूर (ईरानी)
- कृषि – चना, सरसों, गेहूँ, कपास (सिण्डन)
- पशु – कुत्ता, गाय, बैल, ऊँट, बकरी
- ताम्र बैलगाड़ी
- 1952-53 में इसके खोजकर्ता – अमलांनद घोष
- 1961 में इसके उत्खनन कर्ता – बी.बी. लाल, बी. के. थापर।
- कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना 1983
- यह 2400 ई. पूर्व की सभ्यता मानी जाती है।

2. आहड़ सभ्यता

- वर्तमान में उदयपुर के पास आयड़ नदी के किनारे स्थित है।
- इसका प्राचीन नाम ताम्रवती नगरी है।
- 11वीं शताब्दी में आघाटपुर, वर्तमान में धूलकोट कहते है।
- खोजकर्ता – अक्षय कीर्तिव्यास – 1953
- प्रथम उत्खनन – 1956 में रतन चन्द्र अग्रवाल द्वारा
- दूसरा उत्खनन – 1961 में एच.डी. सांकलिया और वी. एन. मिश्र
- सभ्यता के 8 स्तर, मिट्टी व बजरी का फर्श, ढलवा छते, नींव में ईंटों का उपयोग किया गया था।
- विशाल कक्ष को दो भागों में बाँटने की पद्धति
- अन्न भण्डारण के विशाल भण्डारण मिले (गोरे व कोठ)
- लाल काले मृद्‌भाण्ड–भण्डारण पकाने की उल्टी तपाई विधि।
- मुद्राओं पर अपोलो देवता व त्रिशूल का अंकन था।
- 4 मानव मूर्तियाँ तथा लहंगा पहने महिला की खण्डित मूर्ति मिली।
- 6 चूल्हे (सामूहिक भोजन), मानव हथेली की छाप आदि।
- ईरानी शैली की धूपधानियाँ, पूर्वजन्म के साक्ष्य मिले है।
- गले हुए ताम्र के ढेर, 79 लौह वस्तुएँ मिली है।
- ताम्र, कांस्य व लौह युगीन सभ्यता के प्रमाण
- यह 1900 से 1200 ई. पूर्व की सभ्यता मानी गई है।
- पाषाण कालीन सभ्यता के प्रमाण नहीं मिले है।
- आहड़ सभ्यता का विस्तार बालाथल व गिलुण्ड तक है।

बालाथल–उदयपुर

- यहाँ से लाल काले मृदभाण्ड मिलें।
- 1993 में वी.एन. मिश्र (विरेन्द्र नाथ मिश्र) ने इसकी खोज की।
- सूती वस्त्र के प्रमाण, 11 कमरों का भवन, हाथी व चन्द्रमा की आकृतियाँ, परिष्कृत व अपरिष्कृत मृदभाण्ड आदि मिले हैं।

गिलुण्ड – राजसमंद

- 1957 – बृजवासी लाल ने खोज व उत्खनन किया।
- यहाँ से लाल–काले मृद्भाण्ड मिलें।
- सफेद चिकते (धबे) वाले हिरण की मूर्ति मिली है।

ओझीयाना – भीलवाड़ा

- वर्ष 2000 में बी.आर. मीणा ने इसकी खोज की।
- यहाँ से लाल–काले मृद्भाण्ड मिलें।
- सफेद हाथी की मूर्ति प्राप्त हुई है।

ईसवाल–उदयपुर

3. बैराठ सभ्यता

- यह सभ्यता जयपुर (शाहपुरा उपखण्ड में) (अलवर की सीमा पर) में स्थित है।
- इसे औद्योगिक नगरी कहा जाता था।
- खोजकर्ता – दयाराम साहनी (1936–1937)
- उत्खननकर्ता – नील रतन बनर्जी, कैलाश दीक्षित (1962–1963)
- प्राचीन – विराट नगर, मत्स्य महाजनपद की राजधानी थी।
- महाभारत काल में पाण्डुओं ने यहाँ एक वर्ष का अज्ञात वास किया था।
- यहाँ पाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के प्रमाण मिलते है।
- हड़प्पा कालीन मृद्भाण्ड, मोहरें व मूर्तियाँ प्राप्त हुई।
- यूनानी व मौर्यकालीन सिक्के प्राप्त हुए।
- सर्वाधिक सिक्के यूनानी राजा मिनेण्डर के मिलें है।
- मौर्यकालीन आहत या पंचमार्क सिक्के मिलें है (चाँदी) शैल ये सूती वस्त्र में बंधे मिले थे।
- यहाँ से पाषाणकालीन शैल चित्र प्राप्त हुए है।
- शैल चित्रों की अधिकता के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला भी कहा जाता है।
- हूणराजा तोरमाण ने बैराठ को नष्ट किया था।
- शंक लिपि या गुप्त लिपि के प्रमाण प्राप्त होते है।
- मुगलकालीन ताँबे के सिक्कों की टकसाल थी।
- बौद्ध स्तूप, बौद्ध चैत्य, बौद्ध विहार, बौद्ध मंदिर के साक्ष्य, स्वर्ण मंजूशा मिली।
- 634 ई. में चीनी यात्री हेनसांग ने बैराठ की यात्रा की थी। इसने अपने ग्रंथ सी–यू–की में बैराठ को पारयात्र कहा है तथा बैराठ में 8 बौद्ध केन्द्रों का उल्लेख किया है।

भाब्रू अभिलेख

- भाब्रू अभिलेख की खोज 1837 में कैप्टन बर्ट ने की थी।
- यह अभिलेख कलकत्ता की रॉयल एशियाटिक सोयायटी के संग्रहालय में सुरक्षित है।
- इस अभिलेख में अशोक को मगध का राजा कहा गया है।
- अशोक स्वयं को बौद्ध उपासक कहता था।
- बुद्ध धर्म, संघ के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई।
- भाब्रू अभिलेख बीजक पहाड़ी से प्राप्त हुआ।

4. गणेश्वर

- सीकर – नीम का थाना – कांतली नदी के किनारे स्थित है।
- खोज – 1977 में रतनचन्द्र अग्रवाल
- मछली पकड़ने का कांटा , पत्थर का बांध, सर्वाधिक ताम्र वस्तुएँ , ताम्र वस्तुएँ बनाने का कारखाना, पत्थर के बाणाग्र, दोहरे घुमाव वाली सूई आदि मिले है।
- पत्थर के भवन, ईंटों का साक्ष्य नहीं मिला है।
- इस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी और पुरातत्व का पुष्कर भी कहा जाता है।

अन्य प्रमुख स्थल

1. जयपुर

(i) जोधपुरा – साबी नदी के किनारे
(ii) नन्दलालपुरा
(iii) किराड़ौत
(iv) चीचवाड़िचा

2. हनुमानगढ़

(i) रंगमहल
(ii) पीलीबंगा

- रंगमहल – इसका उत्खनन हन्नारिड़ के नेतृत्व में स्वीडिश दल द्वारा किया गया।
- गुरू शिष्य की मूर्ति व टोंटीदार नल के प्रमाण मिलें।

3. बीकानेर

- सोंथी, पूगल, सांवणिया
  तीनों स्थानों की खोज अमलानन्द घोष द्वारा की गई।
- सोंथी सभ्यता को कालीबंगा प्रथम के नाम से जाना जाता है।

4. जैसलमेर

(i) कुण्डा
(ii) ओला

5. अलवर

(i) हरसौरा
(ii) सामधा – पाषाणकालीन स्थल

6. भरतपुर

(i) दर – पाषाणकालीन
(ii) नोह – लौहकालीन

7. सीकर

- गुरारा से 2744 आहत सिक्के प्राप्त हुए।
- राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार।

8. टोंक – रैढ़

- केदारनाथपुरी द्वारा इसका उत्खनन करवाया गया।
- यहाँ से एशिया का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है।
- इसे प्राचीन राजस्थान का टाटा नगर भी कहा जाता है।

9. कोटा – आलनिया इसका जगत नारायण द्वारा उत्खनन करवाया गया।

10. बूंदी – गरदड़ा – यहाँ से बर्ड राइडर रॉक पेंटिग के प्रमाण मिले है।

11. झालावाड़ – कोटड़ा – दीपक शोध संस्थान द्वारा 2000 ई. में उत्खनन करवाया गया।

12. भीलवाड़ा – बागोर – वी.एन. मिश्र द्वारा 1967 में उत्खनन करवाया गया।

- यहाँ से मध्य पाषाण कालीन पशुपालन के व नवपाषण कालीन कृषि के प्रमाण मिले है।

13. चित्तौडगढ़ – पिण्ड़पिण्डालिया, नगरी

14. बाड़मेर – तिलवाड़ा – लूणी नदी के किनारे

15. झुंझुनूं – सुनारी – लोहे का कटोरा, लौह युगीन सभ्यता के प्रमाण

नोट – बनास नदी के अपवाह क्षेत्र में सर्वाधिक पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए है।

जनपद

राजस्थान में आर्य जातियाँ जनपद के रूप में व्यवस्थित थी।

प्रमुख जनपद

मत्स्य जनपद – इसका विस्तार अलवर, जयपुर, भरतपुर, करौली जिलों में हुआ था। मत्स्य जनपद की प्राचीन राजधानी उपाप्लव्य थी। विराट नामक राजा ने विराटनगर को इसकी राजधानी बनाई। पांडवों ने अज्ञातवास का 1 वर्ष यहाँ व्यतीत किया। महाभारत एवं शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मत्स्य जनपद में लम्बे समय तक राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली का प्रचलन था।

शिवि जनपद – भीलवाड़ा चित्तौड़गढ़ के आसपास का क्षेत्र आता था। शिवि जाति का सर्वप्रथम उल्लेख ऋवेद में मिलता है। शिवि जनपद की राजधानी मध्यमिका/नगरी थी। नगरी के आस–पास इस जनपद के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इनकी मुद्राओं पर स्वास्तिक का बैल के साथ अंकन किया जाता था।

शूरसेन जनपद – इसका अस्तित्व उत्तरप्रदेश में था जिसमें राजस्थान के अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली का भू–भाग शामिल था। इसकी राजधानी मथुरा थी।

मालव जनपद – इसका मूल स्थान रावी – चिनाव नदी के संगम का क्षेत्र था। जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया तब ये भागकर नगर (टोंक) क्षेत्र में आ गये। राजस्थान में सर्वाधिक सिक्के मालव जनपद के प्राप्त हुए हैं। कर्कोटनगर को मालवों ने अपनी राजधानी बनाया। 225 ई. के नांदसा भूप स्तम्भ शिलालेख के अनुसार मालव जनपद के राजा श्री सोम षण्ठिराज यज्ञ को सम्मन्न करवाया। मालव जनपर मे गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी।

यौद्धेय जनपद – राजस्थान के उत्तरी भाग गंगानगर व हनुमानगढ़ का क्षेत्र शामिल था। यह जनपद बाद में गुप्त साम्राज्य के अधीन हो गया था।

कुरु जनपद – इसके अन्तर्गत उत्तरी अलवर का क्षेत्र शामिल था। जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। जिसमें वर्तमान दिल्ली का क्षेत्र आता है।

शाल्व जनपद – मत्स्य जनपद निकट शाल्व जनपद था। जिसकी राजधानी मृतिकावती थी।

राजन्य जनपद – भरतपुर के पास स्थित था।

जांगल – इस जनपद में वर्तमान बीकानेर, नागौर, जोधपुर का कुछ भाग आता था। इसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर थी।

अर्जुनायन – भरतपुर–अलवर प्रांत के अर्जुनायन भी अपनी विजय के लिए प्रसिद्ध थे। इनकी मुद्राओं पर भी अर्जुनायनानां जयः अंकित मिलता है।

नगर टोंक से मालव जनपद के ताम्र सिक्के प्राप्त हुए है। शिवी जनपद के सिक्के चितौड़गढ़ के पास सर्वाधिक मिले है।

राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था

मेवाड का इतिहास

परिचय

- मेवाड के प्राचीन नाम:
  मेवाड – उदयपुर, चित्तौड, भीलवाडा, राजसमन्द
  मेदपाट – मेर जनजाति के कारण
  प्रागवाट – प्राचीन नाम
  शिविजनपद – महाभारतकालीन नाम, इसकी राजधानी माध्यमिका / नगरी का उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य एवं गार्गी संहिता मे मिलता है ।

गुहिल वंश की उत्पति

566 ई. मे इस वंश की नींव गुहिल अथवा गुहादित्य ने रखी इसी के नाम पर इसके वंशज गुहिलोत कहलाये । इनकी उत्पति से संबंधित विभिन्न मत प्रचलित हैं ।

1. सूर्यवंशी मत – वीर विनोद ग्रंथ के रचियता श्यामल दास के अनुसार गुहिल विशुध्द क्षत्रिय है तथा भगवान राम के वंशज है
   वीर विनोद के अनुसार गुहिल वल्लभी (गुजरात) से आये हैं ।
   कर्नल जैम्स टॉड भी इन्हें वल्लभी के शासको से संबंधित मानता है ।
2. ब्राह्मण मत – आहड मे प्राप्त लेख के आधार पर डी. आर. भण्डारकर गुहिलों को ब्राह्मण मानते है तथा आनन्दपुर (गुजरात) से आया हुआ बताते हैं ।
   गोपीनाथ शर्मा एवं मुहणौत नैणसी भी इस मत से सहमत हैं ।
   नैणसी के अनुसार इस वंश की 24 शाखाएँ थी । इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे ।
3. विदेशी मत – अबुल फजल के अनुसार गुहिल ईरान के बादशाह नौशेरवा आदिल के संतान हैं ।
   निष्कर्ष – गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय मानता हैं और यही मत सर्वमान्य हैं ।
   - मेवाड के शासक हिन्दुआ सूरज कहलाते हैं
   - यह विश्व का प्राचीनतम राजवंश है जिसने एक ही क्षेत्र पर सर्वाधिक समय तक शासन किया है ।
   - मेवाड के शासको का राजतिलक उन्दरी गाँव के भील सरदार करते हैं ।
   - मेवाड के राजचिन्ह मे मेवाड राणाओं के साथ भीलू का भी चित्रण किया गया है ।
   - मेवाड के शासक स्वयं को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते है तथा एकलिंगनाथ जी को मेवाड का वास्तविक शासक मानते हैं ।
   - मेवाड के राजचिन्ह मे "जो दृढ राखै धर्म को तिहि राखे करतार" पंक्तियाँ उत्कीर्ण हैं ।
   - पहला बडा राजा बापा रावल था ।

गुहिल

- अन्य नाम – गुहादित्य
- पिता – शीलादित्य
- माता – पुष्पावती
- पालन पोषण – कमलावती
- गुहिलो का संस्थापक / आदिपुरूष / मूलपुरूष आदि नामों से जाना जाता है ।

1. बापा रावल : 734 – 753

- वास्तविक नाम – " कालभोज"
- रणकपुर प्रशस्ति मे कालभोज एवं बप्पारावल को अलग आदमी बताया गया है ।
- बापा रावल एक उपाधि थी ।
- इसे मेवाड का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।
- यह हारित ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में मान मौर्य (चित्तौड का राजा) को हराकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया ।
- इसने नागदा (उदयपुर) को राजधानी बनाया ।
- बापा रावल ने नागदा के पास कैलाशपुरी में एकलिंगजी का मन्दिर बनावाया, एकलिंगनाथ जी मेवाड के शासको के कुलदेवता हैं । सांस बहु के मदिर का निर्माण
- बापा रावल ने मेवाड में खुद के नाम के सिक्के चलाये
- राजधानी : नागदा, आहड, चित्तौड
- बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था । तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया ।
- रावलपिंडी;(Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पडा ।
- सी.वी.वैध ने बापा रावल की तुलना फ्रांस का कमांडर चार्ल्स मार्टेल से की हैं ।
- मेवाड में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये । (115 ग्रेन का सिक्का)
- बपारावल के समाधि नागदा बनी हुई है जिसे बपारावल का स्मारक के नाम से जाना जाता है ।

उपाधियां

1. हिन्दू सूरज
2. राजगुरू
3. चक्कवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

2. अल्लट 951 - 971

- मूल नाम - आलु रावल
- इसने आहड (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाई
- इसने आहड में वराह (विष्णु भगवान का अवतार) मन्दिर बनवाया
- सबसे पहले मेवाड में नौकरशाही की स्थापना की ।
- इसने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की थी ।
- जगत (उदयपुर) में अम्बिका माता के मंदिर का निर्माण
- किया जिसे मेवाड का खजुराहो कहा जाता है ।

3. जैत्र सिंह : (1213-50)

- जैत्रसिंह का शासनकाल "मध्यकालीन" मेवाड का स्वर्णकाल था । राजधानी - चित्तौड
- भूताला का युद्ध (1227 ई. में) "जैत्र सिंह" इल्तुतमिश के बीच हुआ इस युद्ध में जैत्रसिंह जीत गया लेकिन इल्तुतमिश ने नागदा (उदयपुर) को उजाड दिया था इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।
- इस युद्ध की जानकारी "जयसिंह सूरी" की किताब "हम्मीर मद मर्दन" से मिलती हैं ।
- 1250-1273 तेजसिंह - कमलचन्द्र द्वारा श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि
- 1248 में नसीरूदीन महमूद ने चित्तौड पर आक्रमण किया जिसमे जैत्र सिंह विजय होता हैं ।

4. रतन सिंह : (1302-03)

- यह रावल शाखा का अंतिम शासक था ।
- रतन सिंह की रानी पदमिनी थी जो सिंहल द्वीप के राजा गंधर्व सैन एवं चम्पावती के पुत्री थी ।
- राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने पदमिनी की सुंदरता का वर्णन आल्लाउद्धीन खिलजी समक्ष किया, खिलजी ने पदमिनी को पाने हेतु चित्तौड पर आक्रमण किया लेकिन चित्तौड आक्रमण के वास्तविक कारण कुछ और थे ।

आक्रमण का कारण

- अलाउदीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा
- चित्तौड का सामरिक व व्यापारिक महत्व
- सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था
- चित्तौड का बढता हुआ प्रभाव
- 25 अगस्त 1303 को चित्तौड का पहला साका होता है ।
- रानी पदमिनी के नेतृत्व मे 1600 महिलाओं ने जौहर किया ।
- रतन सिंह के नेतृत्व मे राजपूत योद्धाओं ने केसरिया किया ।
- साका = जौहर (महिला) +.केसरिया (पुरूष)
- इस युद्ध में (साके में) "गोरा व बादल" (रतन के सेनापति) लडते हुए मारे गये थे । चाचा/भतीजा
- सिसोदा गाँव का लक्ष्मण सिंह अपने सात पुत्रों सहित लडता हुआ मारा जाता है ।
- खिलजी चित्तौड जीत लेता है । उसने चित्तौड का नाम खिज्राबाद कर अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंप दिया ।
- 1311 तक खिज्र खाँ चित्तौड रहता है तत्पश्चात वह किला मालदेव मूच्छाला को सौंपकर वापस चला जाता है ।
- खिज्र खाँ ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया था ।
- खिज्र खाँ ने यहाँ पर धाईबापीर की दरगाह का निर्माण करवाया । इस मकबरे के फारसी लेख में अलाउद्दीन खिलजी को ईश्वर की छाया और संसार का रक्षक बताया गया है ।
- इस युद्ध में इतिहासकार अमीर खुसरो भी मौजूद था । जिसने इस युद्ध का वर्णन अपनी पुस्तक खजाईन उल फुतुह अथवा तारिख - ए - आलाई मे किया ।
- 1540 मे मलिक मोहम्मद जायसी ने अवधि भाषा मे पद्मावत ग्रंथ रचना की जिसमें आलाउदीन और पदमिनी का प्रेम अख्यान है ।
- जेम्स टॉड तथा मुहणौत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया ।
- सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस कहानी को अस्वीकार किया ।
- गौरा बादन चौपाई हेम रतन सूरी ने लिखी ।

5. हम्मीर : (1326-64) राणा हम्मीर

- सिसोदा गाँव (राजस्थान) के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड पर आक्रमण करके चित्तौड को जीत लिया ।
- चूँकि यह सिसोदा गाँव से आया था अतः इसके वंशज सिसोदिया कहलाये ।
- सिसोदा शासक राणा उपाधि का प्रयोग करते थे अतः मेवाड मे राणा शाखा की नींव पडती है ।
- हमीर ने सिंगौली के युद्ध मे मुहम्मद बिन तुगलक को पराजित किया ।
- इसने "बरवडी" (अन्नपूर्णा माता) माता का मन्दिर चित्तौड में बनवाया । यह मेवाड के गुहिल वंश की इष्टदेवी (बरवडी माता) थी ।
  (मेवाड के गुहिल वंश की कुल देवी - बाणमाता)

हम्मीर की उपाधियाँ

- कीर्ती स्तंभ प्रशस्ति में हमीर को विषम घाटी पंचानन कहा गया है अर्थात विकट युद्धो मे सिंह के समान दिखाई देने वाला ।
- रसीक प्रिया मे इसे एक वीर्य राजा बताया गया है ।
- हमीर को मेवाड का उद्धारक भी कहते है ।
- **Note** – मेवाड का द्वितीय उद्धारक – भामाशाह

6. राणा लाखा (लक्ष सिंह)

1382 – 1421

जावर में चाँदी एवं शीशा की खान निकली ।

- इसके समय छीतर बन्जारे ने "पिछोला झील" का निर्माण कराया ।
- इस झील के किनारे "नटनी का चबूतरा" है ।
- कुम्भा हाडा (हाडी रानी का भाई) नकली बूंदी की रक्षा करते हुऐ मारा गया ।

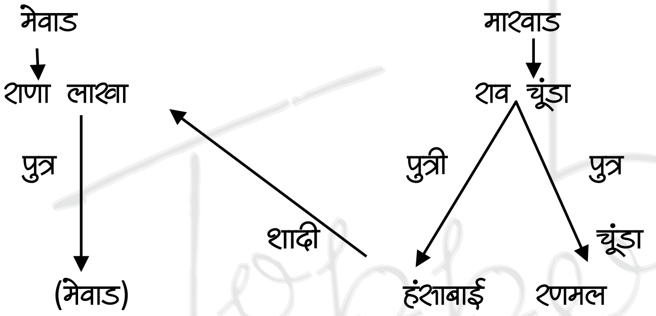

मारवाड के राव चूंडा की पुत्री हंसाबाई की शादी लाखा से इस शर्त पर होती है कि हंसा बाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड का अगला शासक बनेगा, इस शादी को सम्पन्न कराने के लिए लाखा के पुत्र चुंडा ने आजीवन कुंवारा रहने की शपथ ली अतः चुंडा को "मेवाड/ राजस्थान का भीष्म पितामाह" कहा जाता है ।

7. राणा मोकल (1421–33)
(हंसाबाई का बेटा)

कुंवर चुंडा मोकल का संरक्षक बनता है । हंसा बाई के अविश्वास की वजह से कुंवर चुंडा मालवा हौसंग शाह के दरबार मे चला जाता है । अब हंसा बाई का भाई रणमल संरक्षक बनता है ।

1433 में गुजरात के शासक अहमद शाह के आक्रमण को विफल करने के लिए जब मेवाड की सेना ने जीलवाडा (राजसमंद) मे पडाव डाल रखा था तो चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मिलकर मोकल की हत्या कर दी ।

मोकल ने "एकलिंगजी के मन्दिर की चारदीवारी" का निर्माण करवाया एवं द्वारिकाधीश का निर्माण करवाया ।

मोकल ने 'भोज परमार' द्वारा बनवाया गया "त्रिभुवन नारायण मन्दिर" का जीर्णोद्धार करवाया जिसे वर्तमान में "मोकल का समीध्देश्वर मंदिर" के नाम से जाना जाता है ।

8. राणा कुम्भा (1433–68)

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था ।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता मोकल की हत्या का बदला लिया ।
- मेवाड दरबार में रणमल का प्रभाव बढ गया था । उसने सिसोदिया के नेता राघवदेव (चून्डा का भाई) जो मालवा गया था, की हत्या करवा दी ।
- हंसाबाई ने चुंडा को वापस बुलाया तथा भारमली रणमल की प्रेमिका की सहायता से रणमल की हत्या कर दी ।
- इस समय रणमल का बेटा जोधा भी वहाँ मौजूद था जो भागकर काहुनी गाँव (बीकानेर) मे शरण लेता है ।
- 1453 में कुम्भा और जोधा के बीच "आंवल – बांवल की सन्धि" हुई ।
- इस संधि द्वारा जोधा को मन्डोर (मारवाड की राजधानी) वापस दे दिया गया ।
- सोजत (पाली) को मेवाड में मारवाड की सीमा बनाया गया, इस संधि मे जोधा की पुत्री श्रृंगार कंवर की शादी कुंभा के पुत्र रायमल के साथ तय हुई ।
- यह संधि हंसा बाई के मध्यस्था से सम्पन्न हुई थी ।

कुम्भा के शासनकाल के दौरान घटनाक्रम

सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.)

कुम्भा VS महमूद खिलजी 1 (मालवा M.P)

कारण : महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी । इस युद्ध में कुम्भा जीत गया खिलजी को बंदी बना लिया तथा इस जीत की याद में "विजयस्तम्भ" बनवाया ।

चम्पानेर की सन्धि – (1456)

कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी 1
(गुजरात) (मालवा)

उद्देश्य : कुम्भा को पराजित करना एवं कुम्भा का राज्य आपस मे बाँट लेना ।

1457 में बदनौर (भीलवाडा)मे कुम्भा ने इन दोनों की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया ।

कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवडा को हराया ।

कुम्भा ने नागौर के उतराधिकारी संघर्ष में शम्स खाँ का साथ दिया, शम्स खाँ एवं मुजाहिद खाँ दोनो भाई थे । कुशालमाता के मंदिर का निर्माण करवाया ।

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

स्थापत्य कला

1. विजयस्तम्भ (1440 -1448) :- "सारंगपुर युद्ध" में जीत की याद में चित्तौड के किले में बनवाया था ।
   अन्य नामः -कीर्ति स्मम्भ (कुम्भा की कीर्ति को बढाने वाला)
   - विष्णु ध्वज (विष्णु भगवान को समर्पित)
   - गरूड ध्वज (गरूड - विष्णु का वाहन)
   - मूर्तियों का अजयाबघर
   - भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
   - यह 9 मंजिला इमारत हैं ।
   - लम्बाई-चौडाई :- $122 \times 30\ (feet)$सीढियाँ - 156

     वास्तुकार :- जैता (पिता), पूंजा, पोमा, नापा (पुत्र)

     इसमें 9 मंजिल है जिसकी 8वी मंजिल मे कोई मूर्ति नही हैं ।

   - विजयस्तम्भ में 3वी मंजिल में 9 बार "अरबी भाषा" में अल्लाह लिखा हुआ हैं ।
   - "स्वरूप सिंह" ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था ।
   - यह राजस्थान पुलिस व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं अभिनव भारत संगठन का प्रतीक चिन्ह हैं ।
   - 15 अगस्त 1949 को भारत सरकार ने इस पर एक रूपये का डाक टिकट जारी किया, यह राजस्थान प्रथम ईमारत हैं, जिस पर डाक टिकट जारी हुआ ।
   - इस पर कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति उत्कीर्ण की हुई है जिसके रचियता कवि अत्री व महेश हैं ।
   - "जेम्स टॉड" ने विजयस्तम्भ की तुलना "कुतुबमीनार" से की ।
   - "फर्ग्यूसन" ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के "टार्जन टावर" से की ।

जैन कीर्ति स्तम्भः (आदिनाथ स्तम्भ)

12 वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया

7 मंजिला इमारत हैं, 75 फीट ऊँची है ।

यह भगवान आदिनाथ को समर्पित हैं, अतः आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता हैं ।

किले

कवि राजा श्यामलदास जी की पुस्तक वीर विनोद के अनुसार कुम्भा ने मेवाड के 84 किलों में से 32 किलो का निर्माण करवाया ।

(1) कुम्भलगढ :- (राजसमंद) वास्तुकार - मण्डन
- इस किले को मेवाड मारवाड का सीमा प्रहरी कहा जाता हैं ।
- इसका सबसे ऊँचा महल कटारगढ है जो कुम्भा का निजी आवास था इसे मेवाड की आँख कहा जाता हैं ।
- कुम्भलगढ प्रशस्ति का लेखक - महेश
- इस प्रशस्ति में कुम्भा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार कहा गया हैं ।

(2) अचलगढ (सिरोही)
1452 में कुम्भा ने इसका पुनर्निमाण करवाया ।

(3) बासन्ती दुर्ग - सिरोही

(4) मचान दुर्ग - मेरी पर नियंत्रण के लिए ।

(5) भोमत दुर्ग - भील जनजाति पर नियंत्रण हेतु ।

चित्तौड
कुम्भलगढ → में कुम्भस्वामी मन्दिर का निर्माण करवाया
अंचलगढ

- चित्तौड में श्रृंगार चँवरी मन्दिर बनायी ।
- एकलिंगी मीरा मंदिर एवं सारणेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया ।
- 1439 में एक जैन व्यापारी "धरणकशाह" ने "रणकपुर के जैन मन्दिर" का निर्माण करवाया ।
- यहाँ पर चौमुखा मन्दिर सबसे महत्वपूर्ण हैं इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की मूर्ति हैं । इसमें 1444 स्तम्भ हैं इसलिए इसे "स्तम्भों का अजायबघर" कहा जाता हैं ।
- चौमुखा मन्दिर का वास्तुकार देपाक था ।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- ''कुम्भा'' को राजस्थान की ''स्थापत्य कला का जनक'' कहा जाता है ।

साहित्य

कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ (वीणा) था ।
कुम्भा के संगीत गुरू ''सारंग व्यास'' थे ।
कुम्भा के अध्यात्मिक गुरू - हीरानंद
कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थ

- सुधा प्रबन्ध
- कामराज रतिसार
- संगीत सुधा
- संगीत मीमांसा
- संगीत राज
- हरिवार्तिका
- नृत्यरतन कोष
- नवीन गीत गोविन्द वाद्य
- संगीत रत्नाकर
- सुड प्रबंध
- संगीत क्रम दिपिका

संगीतराज 5 भागों में विभाजित हैः-

- पाठ्य रत्न कोष
- गीत रत्न कोष
- नृत्य रत्न कोष
- वाद्य रत्न कोष
- रस रत्न कोष

(पढ़िये, गाईये, नाचो आपको वाद्य रस मिल जायेगा)

- जयदेव की गीतगोविन्द पर ''रसिकप्रिया'' नाम से टीका लिखी ।
- कुम्भा ने ''चण्डी शतक'' पर भी टीका लिखी थी ।
- कुम्भा ने मेवाडी भाषा में 4 नाटक लिखे थे , कुम्भा तीन भाषाओं का ज्ञाता था, मेवाडी, मराठी और कन्नड ।
- कुम्भा ''वीणा'' बनाया करता था ।

कुम्भा के दरबारी विद्वान

विद्वान	पुस्तक
1. कान्ह व्यास	एकलिंग महात्म्य - इसका प्रथम भाग स्वयं कुम्भ द्वारा रचित है, जो राजवर्णन कहलाता है ।
2. मेहा जी	तीर्थमाला
3. मण्डन	वास्तुगार देवमूर्ति प्रकरण राजवल्लभ रूपमण्डन - मूर्तिकला के बारे में कोदण्डमण्डन - धनुष निर्माण के बारे में शकून मण्डन प्रसाद मण्डन वैद्य मण्डन वास्तु मण्डन
4. नाथा (मण्डन का भाई)	वास्तुमंजरी
5. गोविन्द (मण्डन का बेटा)	द्वार दीपिका उद्धार धोरिणी कला निधि सार समुच्चय
6. रमा बाई (कुम्भा की बेटी)	- वागीश्वरी नाम से कविताएं लिख करती थी कुम्भा ने इसे जावर का परगना जागीर मे दिया था ।
7. तिला भट्ट 8. हीरानन्द मुनि	 कुम्भा के गुरू, कविराजा की उपाधि कुम्भा ने दी ।
9. सोमदेव 10. सोम सुन्दर 11. जयशेखर 12. भुवन कीर्ति → जैन मुनि	

कुम्भा ने आबू जाने वाले जैन तीर्थ यात्रियों से कर लेना बन्द कर दिया था ।

कुम्भा की उपाधियाँ

हिन्दु सुरताण	(मुसलमानों को हराने के कारण)
अभिनव भरताचार्य	(संगीत की उपलब्धियों के कारण)
राणा रासौ / राय रायण / राय रासौ	(रासौ - साहित्य)
हालगुरू	(पहाडियों के दुर्गो जीतने के कारण)
चाप गुरू	(एक अच्छा धनुधर होने के कारण)
छाप गुरू	(छापामार (गुरिल्ला) युद्ध कारने के कारण)
परम भागवत	विष्णु, गुप्त
आदि वराह	गुर्जर प्रतिहार
दान गुरू -	दानी शासक
अश्वपति	श्रेष्ठ घुरसवार
नरपति	मानवों मे श्रेष्ठ
राज गुरू	राजाओं मे श्रेष्ठ

कुम्भा को संगीत विश्वंभरी भी कहा जाता है ।
Note : कुम्भा को उन्माद रोग हो गया था, उसकी हत्या उसके बेटे "उदा" ने कुम्भलगढ के किले में कर दी थी ।

1. राणा संग्राम सिंह (सांगा) (1509–28)

- सांगाा का अपने भाईयों के साथ उत्तरधिकारी का झगडा होने पर सांगा भागकर सेवन्त्री गांव मे रूपनारायण जी के मंदिर मे शरण लेता है, यहां बीदा जैतमालोत सांगा की उडना राजकुमार पृथ्वी राज से (सांगाा का भाई) रक्षा करता हुआ मारा जाता है ।
- यहां से सांगा जान बचाकर श्रीनगर (अजमेर) मे करमचंद पंवार के यहां शरण लेता है ।
- कलान्तर में सांगा का भाई पृथ्वीराज एवं जयमल की मृत्य हो जाती है, सांगा मेवाड का शासक बनता है ।

2. खातोली का युद्ध (कोटा) - 1517

- सांगा V/s इब्राहिम लोदी (दिल्ली का सुल्तान)
- सांगा जीत गया ।

3. बाडी का युद्ध (धौलपुर) - 1518-1519

- सांगा V/s इब्राहिम लोदी
- सांगा जीत गया ।

4. गागरौन का युद्ध (झालावाड) - 1519

- सांगा + मेदिनी राय v/s महमूद खिलजी (द्वितीय) (मालवा, M.P)
- सांगा जीत गया ।
- कारण : गागरौन का किला इस समय सांगा के दोस्त चन्देरी (M.P) के राजा मेदिनीराय के पास था ।
- ईडर का उतराधिकारी संघर्ष - 1520
- राणा सांगा v/s मुजफ्फर शाह 2 गुजरात

ईडर
भारमल — भाई — रायमल
(इसका पक्ष सांगा ने लिया) (इसका पक्ष मुजफफर शाह ने लिया)

5. बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527 ई.) (भरतपुर)

- सांगा V/s बाबर
- बाबर को हराया ।
- इस समय किले का रक्षक मेहन्दी ख्वाजा (बाबर का सेनापति) था ।
- बाबर ने मोहम्मद सुल्तान मिर्जा के नेतृत्व में सेना भेजी ।

6. खानवा का युद्ध : (रूपवास तहसील भरतपुर) : 17 मार्च 1527

- खानवा युद्ध मे बाबर विजय होता है, बाबर के विजय के निम्न कारण थे -
- (वीर विनोद श्यामदास के अनुसार 16 March)
- बाबर ने जिहाद की घोषणा की । (धर्मयुद्ध)
- बाबर ने शराब न पीने की कसम खाई व अपने चांदी के सारे पात्र तोड दिये ।
- बाबर ने इस युद्ध मे तुलुगमा पद्धित अपनाई ।
- हिंदुस्तान मे सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया ।
- बाबर ने मुस्लिम व्यापारियों से तमगा कर हटा दिया ।
- बाबर ने इस युद्ध मे गाजी की उपाधि धारण की ।
- इस युद्ध से पूर्व सांगा ने भी राजपुताना की समस्त रियासतों को युद्ध में शामिल होने हेतु आमंत्रित किया

जिसे पाती परवन की रस्म कहा जाता है, इस युद्ध में राजपुताना के निम्न शासक शामिल हुए ।

प्रमुख राजा जो युद्ध में शामिल हुये

1. आमेर - पृथ्वीराज
2. मारवाड - मालदेव (गंगा (राजा) का बेटा)
3. बीकानेर - कल्याणमल (राजा - जैतसी)
4. मेडता - वीरमदेव
5. चन्देरी - मेदिनीराय
6. सलूम्बर - रतनसिंह चूण्डावत
7. वागड - उदयसिंह
8. देवलिया - वाघ सिंह
9. मेवात - हसन खाँ मेवाती
10. ईडर - भारमल
11. इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी
12. सिरोही - अखेय राज देवडा
13. बिजोलिया - अशोक परमार
14. काठियावाड - झालाअज्जा
15. गोगुंदा - झाला सज्जा
16. जालौर - अखेय राज सौनगरा

- युद्ध में राणा सांगा के आंख मे तीर लग जाता है, राव मालदेव घायल सांगा को युद्ध स्थल से बाहर ले जाता है ।
- सांगा युद्ध में घायल हो गया अतः "झाला अज्जा" ने युद्ध का नेतृत्व किया । परन्तु बाबर युद्ध जीत गया था । जीतने (खानवा का युद्ध) के बाद बाबर ने "गाजी की उपाधि" (धर्म के लिए लडना) धारण की ।
- "बसवा (दौसा)" में सांगा का इलाज किया गया । (यहां सांगा की छतरी को निर्माण राजा पृथ्वीराज कच्छवहा ने करवाया)
- सांगा चंदेरी के मेदिनीराय की सहायता के लिए आगे बढा
- "ईरिच (M.P)" नामक स्थान पर कालपी के पास सांगा के साथियों ने उसे जहर दे दिया और उसकी मृत्य हो गयी ।
- "मांडलगढ (भीलवाडा)" में सांगा की छतरी हैं ।
- इतिहास में सांगा का नाम अन्तिम भारतीय हिन्दू सम्राट के रूप में अमर है ।

सांगा की उपाधियाँ

1. हिन्दुपत
2. सैनिको का भग्नावशेष (उसके शरीर पर 80 घाव थे)

Note:

- सांगा का बडा बेटा भोजराज था जिसकी शादी मीराबाई के साथ हुई थी ।
- सांगा के बाद रतनसिंह राजा बना । परन्तु यह बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लडते हुए मारा गया था

1. विक्रमादित्य (1531-36)

- कम उम्र में राजा बना था इसलिए इसकी माता "कर्मावती" इसकी संरक्षिका बनी ।
- 1533 में गुजरात के शासक "बहादुर शाह" ने मेवाड पर आक्रमण किया, लेकिन कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली ।
- 1534 में बहादुर शाह ने पुनः आक्रमण कर दिया । लडाई के लिए सक्षम न होने के कारण कर्मावती मुगल बादशाह हुमायँ को राखी भेजकर सहायता मांगती हैं । जौहर 1534-35 में किया गया ।
- लेकिन हुमायुँ के आने से पहले ही मेवाड में "दूसरा साका" हो जाता हैं ।
- रानी कर्मावती के नेतृत्व में 1300 महिलाओं ने जौहर किया, देवलिया के रावत बाघ सिंह के नेतृत्व मे राजपूत यौद्धाओ ने केसरी किया ।
- रावत बाग सिंह की छतरी रामपोल के पास बनी हुई है, जिसे देवलिया दिवान के नाम से जाना जाता है । यह चित्तौड का दूसरा साका था ।
- हुमायुं से डर कर बहादुर शाह चित्तौड से भाग गया । तथा हुमायुँ दिल्ली वापस लौट गया ।
- विक्रमादित्य अल्पव्यस्क था अतः बनवीर को संरक्षक बनाया गया (बनवीर पृथ्वीराज की दासी से उत्पन्न पुत्र था ।) बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी । जब वह उदय सिंह की हत्या का प्रयास करता है तो पन्नाधाय अपने पुत्र चंदन की बलि देकर उदय सिंह को बचाकर केलवा की जागीर से होते हुये कुम्भलगढ पहुंचती हैं, यहा का किलेदार आशादेवपुरा इनको शरण देता हैं । बनवीर को चित्तौड मे तुलजा भवानी का मंदिर बनाया बनवीर ने चित्तौड नव कोठा एवं नवलक्खा महल बनाये ।

2. उदयसिंह (1537-72)

- 1537 मे राव मालदेव के सहयोग से कुम्भल गढ मे उदय सिंह का राजतिलक होता हैं ।
- अखै राज सौन्दरा ने अपनी पुत्री जयवन्ता बाई की शादी उदय सिंह से की ।
- 1540 में मावली के युद्ध (उदयपुर) में राव मालदेव के सहयोग से बनवीर को हराकर उदयसिंह राजा बन गया ।
- 1557 मे हरमाडा के युद्ध में अजमेर के सुबेदार हाजी खाँ पठान से युद्ध करता है (जिसे मालदेव का सहयोग प्राप्त था)
- 1543 में शेरशाह सूरी के आक्रमण की सूचना पाकर किले की कुँजियाँ (चाबियाँ) शेरशाह सूरी के पास

भिजवा देता है । सूरी ने ख्वास खां को मेवाड को प्रशासक नियुक्ति किया ।

- "1559" में उदयसिंह ने "उदयपुर की स्थापना" की तथा यहाँ पर "उदयसागर झील" का निर्माण करवाया ।
- 1567 अक्टूबर में अकबर ने मेवाड पर आक्रमण कर दिया ।
- उदय सिंह किले का भार जयमल मैडतियां एवं फता सिसोदिया के कन्धों पर छोडकर स्वयं गिरवा के पहाडियों मे चला जाता है ।
- इस समय चित्तौड का "(तीसरा)" साका हुआ
- यह साका "जयमल (पहले मेडता का शासक था जिसे 1562 में अकबर ने छीन लिया था तथा ये उदयसिंह के पास आ गया था) व फत्ता के नेतृत्व में हुआ था ।"
- फुले कंवर चुंडा के नेतृत्व में महिलओं ने जौहर किया
- (जयमल अकबर की संग्राम नामक बंदूक से घायल होने के कारण कल्ला राठौड के कन्धों पर बैठकर युद्ध करता है । इसलिए "कल्ला राठौड को चार हाथो वाला लोक देवता" कहा जाता है ।)
- फता सिसोदिया की छतरी रामपोल के पास बनी हुई है तथा जयमल एवं कल्ला मैडतियां की छतरी हनुमान पोल एवं भैरव पोल के बीच मे बनी हुई है ।
- उदय सिंह को खोजने हेतु अकबर ने हुसैन कुल्ली खां को भेजा 24 फरवरी 1568 को मेवाड का तीसरा साका सम्पन्न हुआ
- 25 फरवरी 1568 को अकबर का चित्तौड पर अधिकार हो गया ।
- अकबर ने इस किलें में (चित्तौड) 30,000 लोगों का नरसंहार करवाया
- अकबर जयमल व फत्ता की वीरता से प्रसन्न होकर इनकी मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई थी जिसे बाद में औरंगजेब ने तुडवा दिया था ।
- बीकानेर के जूनागढ किले में राय सिह ने भी इन दोनों की मूर्तियाँ लगवाई हुई ।
- इसके बाद उदयसिंह ने "गोगुन्दा (उदयपुर)" को अपनी राजधानी बनाया यहीं पर इसकी 28 फरवरी 1572 ई. को मृत्यु हो गई तथा यही पर उसकी छतरी हैं ।

3. महाराणा प्रताप - (1572-97)
(लगभग 25 साल राजा रहा)
राजमहलों की क्रांति

- उदय सिंह को अपनी भटियानी रानी धीर कंवर से विशेष अनुराग था । अतः राणा प्रताप को शासक न बनाकर जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया ।
- कृष्णदास चूंडावत ने जगमाल को हराकर राणा प्रताप को मेवाड का शासक बनाया ।
- मेवाड के सामन्तों ने जगमाल को हटाकर प्रताप का राजतिलक गोगुन्दा में कर दिया था ।
- लेकिन प्रताप ने "कुम्भलगढ के किले" में दुबारा अपना विधिवत् राजतिलक करवाया ।
- जन्मः 9 मई 1540 (कुम्भलगढ किले में) कटारगढ दुर्ग
- माता : जसवन्ताबाई सोनगरा
- रानी :अजबदे पंवार
- बचपन का नाम - कीका (छोटा बच्चा)

हल्दी घाटी का युद्ध - (1576)

गोपीनाथ शर्मा के अनुसार इस युद्ध की तिथि 21 जून है लेकिन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पुस्तक मे 18 जून है ।

अकबर ने प्रताप को अपने अधीन करने के लिए 4 प्रतिनिधि मंडल भेजे थे ।

1. जलाल खाँ कोरची (नवंबर 1572)
2. मानसिंह (आमेर का राजकुमार) (जून 1573 अमर काव्य के अनुसार उदय सागर झील की पाल पर राणा से मुलाकात)
3. भगवन्त दास (आमेर का राजा) (अक्टूबर 1573)
4. टोडरमल (अकबर का वित्त मंत्री) (दिसंबर 1573)

मानसिंह जब मिलने आया था प्रताप सिंह ने अपने बेटे अमर सिंह को भेजा था । वह खुद नहीं आया । इन चारों के भेजने से भी प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं कि इस कारण हल्दीघाटी का युद्ध हुआ ।

हल्दीघाटी का युद्ध (राजसमन्द)
(18 जून 1576)

- अकबर के सेनापति = मानसिंह, आसफ खाँ
- मानसिंह का यह पहला स्वतंत्र अभियान था । इस युद्ध से पूर्व मुगल सेना ने मांडल गढ मे रहकर युद्ध की तैयारी की थी । कुछ माह की तैयारी के बाद मुगल सेना राजसमंद के मौलेला गांव मे पडाव डालती है ।
- जब राणा प्रताप ने यह समाचार सुना तो वह भी सेना सहित लौसिंह गांव मे अपना पडाव डालता है ।
- मुगलों के तरफ से हरावल का नेतृत्व जगमाल कच्छवाह कर रहा था ।
- मेवाड की तरफ से हरावल का नेतृत्व हाकिम खां सूर एवं पूंजा भील कर रहे थे ।

- 18 जून 1576 अल सुबह युद्ध की रण भेरी बज उठती है । राजपूतो का पहला वार इतना जोशीला था । कि मुगल सेना के पांव उखडने लगे ।
- ''मिहतर खाँ'' ने मुगलों की भागती हुई सेना को प्रोत्साहित किया था कि अकबर रणभूमि में आ रहा है ।
- भागते मुगल सैनिक बनास नदी के काठे मे स्थित संकरी घाटी जिसे रक्तताल अथवा हल्दी घाटी कहते है, में आ डटे ।
- महाराणा प्रताप मुगल सेना को चीरते हुये वायु के वेग से मानसिंह के पास जा पहुंचे प्रताप ने अपने भाले से मानसिंह पर प्रहार किया, प्रताप का भाला महावत को चीरता हुआ हौदे से जा टकराया, मानसिंह बडे मुश्किल से बिजली सा तीव्र प्रहार से बचाया, लेकिन हाथी के सूंड मे बंधे खंजर से चेतक घायल हो जाता है । घायल चेतक को राणा प्रताप युद्ध स्थल से बाहर ले जाते है ।
- राणा की अनुपस्थिति में झाला बीदा ने राणा का छत्र धारण कर मेवाडी सेना का नेतृत्व किया । चेतक की समाधि बालीचा गांव मे बनी हुई है ।
- इस युद्ध मे अलबदायुँनी मौजूद था । जिसने इस युद्ध का वर्णन मुंतक - उत - तवारिख नामक पुस्तक मे किया है । दोपहर होते - होते यह युद्ध अनिर्णित समाप्त होता है । मानसिंह गोगुंदा की तरफ चला जाता है । प्रताप कुम्भलगढ की तरफ ।
- यह युद्ध हाथियों के लिए भी प्रसिद्ध था । मेवाड की तरफ से लूणा और रामप्रसाद हाथी लडे । अकबर की तरफ से गजमुक्त, रणमदार, गजराज हाथी लडे । मनसिंह के हाथी का नाम मरदाना था ।

हल्दीघाटी युद्ध को इतिहासकारों द्वारा दी हुयी उपाधियाँ

अबुल फजल - खमनौर का युद्ध
बदायूनी - गोगुन्दा का युद्ध
जेम्स टॉड - ''मेवाड की थर्मोपोली''

- आदर्शीलाल श्रीवास्तव - बादशाह बाघ का युद्ध
- 13 अक्टूबर 1576 को अकबर स्वयं गोगुंदा आता है । उदयपुर को जीतकर उसका नाम मोहम्मदाबाद कर देता है ।
- 1576 में अकबर ने मेवाड अभियान हेतु शाहबाज खां को नियुक्त किया, इसने मेवाड जीतने के चार असफल प्रयास किये, लेकिन 3 अप्रैल 1578 को भीष्ण संघर्ष के बाद शहबाज का खां कुम्भलगढ जीतने में सफल हो जाता है । इस समय राणा प्रताप कुम्भलगढ का भार मानसिंह सोनगरा के कंधो पर स्वयं जंगलो मे चले जाते है ।
- 1580 अब्दुल खान खाना ने मेवाड पर आक्रमण किया, जो असफल रहा ।

1582 दिवेर का युद्ध

दिवेर का सूबेदार सुल्तान खां था । अमर सिंह ने तलवार के एक ही वार में सुल्तान खां के घोडे सहित दो फाड कर दिये । यह दृश्य देखकर मुगल सेना भाग खडी होती है । राणा प्रताप ने माण्डल गढ एवं चित्तौड को छोडकर मेवाड के समस्त भू भाग को पुनः प्राप्त कर लिया, इस युद्ध को मेवाड का मैराथन कहा जाता है ।

1585 - अकबर की तरफ से अंतिम मेवाड अभियान जगन्नाथ कच्छवाह ने किया । जो असफल रहा । जगनाथ कच्छवाह की 32 खम्भों की छतरी मांडल गढ मे है ।

दरबारी विद्वान	पुस्तक
चक्रपाणि मिश्र	राज्याभिषेक मुहुर्तमाला विश्ववल्लभ - बगीचों (उद्यान विज्ञान) की जानकारी
हेमरत्न सूरी	गौरा - बादल - री चौपाई
रामा सांदू	
माला सांदू	झूलना

- भामाशाह तथा ताराचन्द नामक दो भाइयों ने प्रताप की आर्थिक सहायता की । 25 लाख रूपये तथा 12 हजार अशर्फी (सोने के सिक्के) दिये थे ।
- भामाशाह को प्रताप ने प्रधानमंत्री बनाया ।
- प्रताप ने सादुलनाथ त्रिवेदी को मंडेर की जागीर दी थी ।
- भामाशाह के उपनाम - मेवाड का कर्ण, रक्षक, दानवीर, द्वितीयक उद्धारक
- (1588 के उदयपुर अभिलेख के अनुसार)
- इसके बाद प्रताप ने ''चावण्ड (उदयपुर)'' को अपनी राजधानी बनाया
- चावण्ड से मेवाड की चित्रकला प्रारम्भ हुई । प्रमुख चित्रकार नासिरूद्दीन था ।
- प्रताप ने चावण्ड में चामुण्डा माता का मन्दिर, महल व बावडियों का निर्माण करवाया ।
- 19 जनवरी 1597 में ''चावण्ड'' में प्रताप की मृत्यु हो गई ।
- ''बाडोली'' में प्रताप की 8 खम्भों की छतरी है

4. अमरसिंह प्रथम (1597-1620)

- 1613 में जहांगीर स्वयं अजमेर आता है और शहजादा खुर्रम को मेवाड अभियान हेतु नियुक्त करता है ।
- दो साल की सफल घेराबंदी के बाद खुर्रम मुगल - मेवाड संधि कराने मे सफल होता है ।
- मुगल मेवाड सन्धि - 5 फरवरी 1615
- यह सन्धि ''अमरसिंह'' व मुगल बादशाह ''जहाँगीर'' के बीच हुई
- युवराज करणसिंह (अमरसिंह का बेटा) के दबाव के कारण अमरसिंह ने सन्धि की । जहाँगीर की तरफ से ''खुर्रम'' (जहाँगीर का बेटा) ने सन्धि की थी ।
- खुर्रम की तरफ से सुंदर जी एवं हीरा जी को नियुक्त किया ।
- मेवाड की तरफ से सन्धि का प्रस्ताव लेकर ''शुभकरण'' व ''हरिदास झाला'' गये थें ।
- 1615 ई. में चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।

संधि की शर्ते

1. मेवाड का राणा मुगल दरबार में नहीं जायेगा बल्कि उसके स्थान पर युवराज जायेगा ।
2. मेवाड मुगलों को 1000 घुडसवारों की सहायता देगा ।
3. चित्तौड का किला मेवाड को वापस दिया जायेगा लेकिन मेवाड उसका पुनर्निर्माण नहीं करवायेगा ।
4. मेवाड के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जायेंगे ।

युवराज करणसिंह मुगल दरबार में हाजिर हुआ । जहाँगीर ने उसे 5000 का मनसबदार बनाया ।

- जहाँगीर ने प्रसन्न होकर अमरसिंह व करणसिंह की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई थी । (बाद में औरंगजेब ने गिराया था ।)
- टॉमस रो ने कहा था (संधि के बारे में) मुगल बादशाह ने मेवाड के राणा को समझौते से अधीन किया है न कि ताकत से ।
- अमरसिंह इस संधि से दुःखी होकर राजकार्य छोड देता है तथा नौ चौकी पास (राजसमन्द) नामक स्थान पर अपने अन्तिम दिन व्यतीत करता है । इसी स्थान पर बाद में राजसमन्द झील बनाई गई थी ।

5. कर्णसिंह (1620-28)

- यह मेवाड का पहला शासक था जिसके लिए राणा की पदवी का फरमान मुगल दरबार से आया था । 5000 का मनसब ।
- यह मेवाड का पहला शासक अथवा राजकुमार था । जो मुगल दरबार मे उपस्थित हुआ था ।
- इसने उदयपुर में जगमन्दिर महलों का निर्माण शुरू करवाया था ।
- 1623 शाहजहाँ अपने पिता से विद्रोह के दौरान इन्ही महलों में रूका था । इससे पहले देलवाडा महलो मे रूका था ।
- उदयपुर में कर्णविलास व दिलखुश महल बनाएँ
- इसके समय स्थापत्य कला में मुगल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

6. जगतसिंह प्रथम (1628-52)

- इसने जगमन्दिर महलों का निर्माण पूरा करवाया था ।
- इसने उदयपुर में ''जगदीश मन्दिर'' का निर्माण करवाया । पंचायत शैली का मंदिर है । यह भगवान विष्णु को समर्पित है ।
- उस मंदिर के वास्तुकार भाणा एवं मुकुंद थे और अर्जुन की देख रेख मे पूरा हुआ ।
- इस मन्दिर की ''जगन्नाथ राय प्रशस्ति'' का लेखक ''कृष्ण भट्ट'' था ।
- जगत सिंह ने पिछोला झील मे मोहन मंदिर एवं रूप सागर झील का निर्माण करवाया ।
(इसे सपने में बना मन्दिर कहा जाता है ।)
- जगतसिंह की धाय माँ नौजूबाई ने भी एक मन्दिर का निर्माण करवाया जिसे धाय माँ का मन्दिर कहा जाता है । (उदयपुर)
- जगतसिंह प्रथम अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध राजा था ।

7. राजसिंह (1652-80)

- 1652 में शासक बनते ही चित्तौड किले की मरम्मत करवाता है । यह समाचार सुनकर शाहजहां ने सादुल्ला खां के नेतृत्व में 30 हजार मुगल सेना भेजी जो किले के कंगूरे एवं बुर्जे गिराकर वापस लौट जाती है राजसिंह ने कोई प्रतिरोध नही किया ।
- 1658 में शाहजहां के उत्तराधिकारी के संघर्ष में छद्म तौर पर औरंगजेब का साथ देता है । औरंगजेब ने इसने 6000 का मंसबदार बनाया एवं बांसवाडा, डुंगरपुर, और देवलिया (प्रतापगढ) की जागीरें राजसिंह के अधीन की ।
- 2 मई 1658 को टीका दौड के बहाने मुगल थानों पर आक्रमण करता है तथा मेवाड के खोये हुये क्षेत्र पुनः जीतता है ।
- 1669 मे किशनगढ की राजकुमारी चारूमती से विवाह करता है जिसका सम्बन्ध औरंगजेब से तय हो रख था । यहां से मुगल मेवाड संबंध खराब होते है । यह विवाह इतिहास में हाडी रानी सलह कंवर एवं

उसके पति रतन सिंह के चुंडावत के त्याग एवं बलिदान के लिए याद किया जाता है ।

- हाडी रानी सलह कंवर ने निशानी के तौर पर अपना सिर काटकर दे दिया था ।
- इसने मारवाड के अजीत सिंह (जसवन्त सिंह का बेटा, जोधपुर 1678 का शासक) को औरंगजेब के खिलाफ समर्थन दिया था ।
- (इसे "राठौड - सिसोदियाँ गठबंधन कहा जाता है ।")
- औरंगजेब की हिंदू विरोधीनीति को विरोध करता है । औरंगजेब ने जब हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियों को तोडने का आदेश दिया तो राजसिंह ने दाउजी महाराज को मथुरा भेजते है । जहां से दाउ जी द्वारिकाधीश जी एवं श्रीनाथ जी की मूर्तियां लेकर आते है । जिन्हें क्रमशः कांकरोली एवं सिंहाड (श्रीनाथद्वारा) में स्थापित करवाता है ।
- 1679 में औरंगेजब जजिया कर लगता है । जिसका राज सिंह विरोध करते है ।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

1. श्रीनाथजी का मंदिर - नाथद्वारा (राजसमन्द)
2. द्वारिकाधीश मन्दिर - कांकरोली (राजसमन्द)
3. अम्बा माता मन्दिर - अम्बा माता मन्दिर(उदयपुर)
4. घेवर माता मन्दिर - राजसमंद की पाल
5. सर्वऋतु विलास महल बनवाए ।
6. राजनगर कस्बा बसाते है । जो राजसमंद जिला मुख्यालय है ।

3 झीलें बनवाई

1. राजसमन्द झील
2. त्रिमुखी बावडी (उदयपुर) अथवा जया बावडी (इसकी रानी रामरसदे ने बनवाई)
3. जानासागर तालाब (उदयपुर) - इसकी माँ जनादे ने निर्माण करवाया ।

3 विद्वान थे

नाम		किताब
किशोरदास		राजप्रकाश
सदाशिव भट्ट		राज रत्नाकर
रणछोड भट्ट "तैलंग"		अमरकाव्य वंशावली राज प्रशस्ति (राजसमन्द झील के बाहर की प्रशस्ति)
उपाधि	हाइड्रोलिक रूलर	(पानी की व्यवस्था करने के कारण)
	विजय कटकातु	(सैन्य प्रोत्साहन हेतु)

राजप्रशस्ति

- 1662 मे अकाल राहत कार्यो के तहत राजसमन्द झील का निर्माण करवाया । यहीं पर काले संगमरमर पर 25 बडे - बडे शिलालेख पर प्रशस्ति लिखी गई है ।
- जो "संस्कृत का सबसे बडा शिलालेख है ।"
- यह प्रशस्ति बापा रावल से लेकर राजसिंह तक के राजाओं का वर्णन, मुगल मेवाड सन्धि तथा राजसमन्द झील के निर्माण की जानकारी देती है । इस झील का निर्माण 1662-1676 के बीच अकाल राहत कार्यों में किया गया था ।
- कुम्भा के बाद सर्वाधिक सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने वाला राजसिंह था ।

8. अमरसिंह द्वितीय (1698-1710)

देबारी समझौता (1710)

यह समझौता मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम के खिलाफ किया गया था ।

अमरसिंह द्वितीय - मेवाड →
सवाई जयसिंह - आमेर → इन तीनों के बीच अजीत
सिंह - मारवाड → समझौता हुआ

समझौते की शर्तें

1. सवाई जयसिंह व अजीतसिंह को उनके राज्य दिलाने में मदद की जाये ।
2. अमरसिंह द्वितीय ने अपनी बेटी "चन्द्रकँवर" की शादी "सवाई जयसिंह" के साथ की तथा शर्त रखी कि चन्द्रकँवर के बेटे को आमेर का अगला राजा बनाया जायेगा ।
   (चन्द्रकँवर के नाम पर ही जयपुर में "सिसोदिया रानी का बाग" है ।)

9. संग्रामसिंह - द्वितीय : 1710 - 1734

इसके समय मेवाड मे सर्वप्रथम मराठों का हस्तक्षेप होता है । इसने "सहेलियों की बाडी" बनवाया इसने सीसारमा गाँव (उदयपुर) में वैद्यनाथ मन्दिर बनवाया । वैद्यनाथ प्रशस्ति का लेखक - "रूप भट्ट" इसके समय प्रसिद्ध कलीला - दमना चित्र का चित्रण हुआ ।

10. जगतसिंह - द्वितीय : 1734-1751

हुरडा सम्मेलन (भीलवाडा)- 17 जुलाई 1734 (संधि पत्र पर हस्ताक्षर) इस सम्मेलन की शुरूआत 16 जुलाई 1734 को हुई । यह सम्मेलन मराठों के खिलाफ राजपूत

राजाओं को एक करने के लिए "सवाई जयसिंह" द्वारा बुलाया गया था । जिसमें वर्षा ऋतु के बाद रामपुरा (भीलवाडा) में मराठों के विरूद्ध एकजुट होकर युद्ध करना तय किया इसका अध्यक्ष – जगतसिंह द्वितीय (मेवाड)

राजा जिन्होने इस सम्मेलन में भाग लिया

- आमेर – सवाई जयसिंह
- मारवाड – अभय सिंह
- नागौर – बख्त सिंह
- बीकानेर – जोरावर सिंह
- बून्दी – दलेल सिंह
- कोटा – दुर्जन साल
  - किशनगढ – राजसिंह
  - करौली – गोपालपाल

राजाओं के मतभेदो के कारण यह सम्मेलन असफल रहा था ।खानवा युद्ध के बाद पहली बार राजपूत राजा किसी दूसरी शक्ति के खिलाफ एकजुट हुये थें ।

जगत सिंह के दरबारी नेक राम ने जगत विलास ग्रंथ लिखा 1746 में पिछोला में जगनिवास महलों का निर्माण करवाया ।

11.भीमसिंह : 1778–1828 ई.

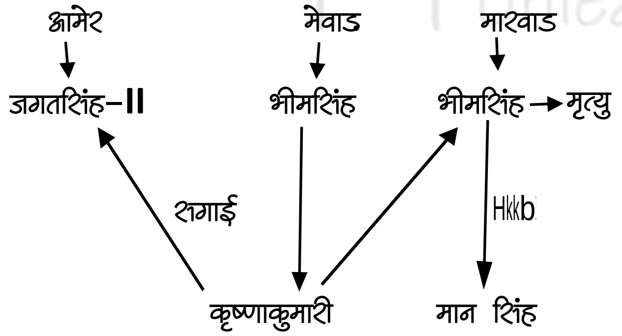

गिंगोली का युद्ध/परबतसर का युद्ध (1807)

जगत सिंह द्वितीय **V/S** मान सिंह
सूरत सिंह बीकानेर
अमीर खां पिण्डारी
(विजय)

- "अजीतसिंह चुन्डावत" व टोंक के "अमीर खाँ पिण्डारी" (टोंक) के कहने पर कृष्णाकुमारी को जहर देकर मार दिया गया ।
- 13 जनवरी "1818" में भीमसिंह ने अंग्रेजो से सन्धि कर ली थी ।
- मेवाड की तरफ से इस संधि में अजीत सिंह चुंडावत ने भाग लिया तथा अंग्रेजों की तरफ से मेटकॉफ था ।
- मेवाड का पॉलिटिकल ऐजेंट कर्नल जेम्स टॉड था ।

12. स्वरूप सिंह –1842 – 1861

मेवाड में स्वरूप साही सिक्के चलाये जिनमें एक तरफ चित्रकूट उदयपुर लिखा होता था दूसरी तरफ दोस्ती लंधन लिख होता था । इनके साथ पासवान ऐंजाबाई सती हुई ।

- 1844 में समाधि प्रथा पर रोक लगाई ।
- 1853 में डाकन प्रथा पर रोक लगाई ।
- 1856 में कन्यावध पर रोक लगाई ।
- 15 अगस्त 1861 को सती प्रथा पर रोक लगाई ।
- इसकी मृत्यु पर इसकी पासवान ऐजाबाई सती होती है, यह मेवाड महराणाओं के साथ सती होने का अंतिम उदाहरण है ।
- बिजली गिरने से विजय स्तम्भ की उपरी मंजलि क्षतिग्रस्त हो गई थी । मरम्मत करवाता है ।

13. सज्जन सिंह – 1874 – 1884

- 2 जुलाई 1870 को युवा अवस्था में देशहितेश में सभा का गठन करता है ।
- 1877 में लिटन द्वारा आयोजित दिल्ली दरबार में भाग नही लेता ।
- 20 अगस्त 1880 को महेन्द्राज सभा का गठन करता है ।
- म्हारानी विक्टोरिया को 'केसर–ए–हिन्द की उपाधि दी ।
- 1881 में मेवाड मे जनगणना होती है । जिसका सही उद्देश्य नही बताने पर भीलों ने उपद्रव कर दिया, सज्जन सिंह ने इस विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया । अतः 23 नवंबर 1881 को लाड रिपन स्वयं चित्तौड आते है । और महाराणा को जी. सी. एस. आई. (great commonder of the star of India) की उपाधि दी ।
- 1881 ई. में सज्जन यंत्रालय छापखाने का निर्माण करवाया । यहां से सज्जन कीर्ति सुधारकर साप्तहिक पत्रिका का प्रकाशन होता था ।
- उदयपुर में सज्जन वाणी विलास पुस्तकालय का निर्माण करवाया ।
- उदयपुर में सज्जन बाग का निर्माण करवाया ।
- उदयपुर में सज्जनगढ किले का निर्माण करवाया । जिसे मेवाड का मुकुट मणी कहा जाता है । स्यामलदास को कविराजा एवं महामहोपाध्याय की उपाधि दी ।